सूरह — एक कहानी

सूरह अल-फ़ुरक़ान

कसौटी

पूरा सफ़र — रहमान के बंदे —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 25 • 77 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

तबारकल्-लज़ी नज़्ज़लल्-फ़ुरक़ान 'अला 'अब्दिही लि-यकून लिल्-'आलमीन नज़ीरा
1. बरकत वाला है वो जिसने फ़ुरक़ान अपने बंदे पर उतारा, ताकि वो जहानों के लिए ख़बरदार करने वाला हो।

व यौम य'अज़्ज़ुज़्-ज़ालिमु 'अला यदैहि यक़ूलु या लैतनित्-तख़ज़्तु म'अर्-रसूलि सबीला
27. और उस दिन ज़ालिम अपने हाथ काटेगा, कहेगा: काश मैंने रसूल के साथ एक राह पकड़ी होती।

व क़ालर्-रसूलु या रब्बि इन्न क़ौमित्-तख़ज़ू हाज़ल्-क़ुरआन मह्जूरा
30. और रसूल कहेगा: ऐ मेरे रब, मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ दिया।

व 'इबादुर्-रहमानिल्-लज़ीन यम्शून 'अलल्-अर्ज़ि हौनंव्-व इज़ा ख़ातबहुमुल्-जाहिलून क़ालू सलामा
63. और रहमान के बंदे वो हैं जो ज़मीन पर नर्मी से चलते हैं, और जब जाहिल उनसे बात करें तो कहते हैं: सलाम।

रब्बना हब लना मिन अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्रत अअ्युन
74. ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीवियों और औलाद से आँखों की ठंडक अता कर।

क़ुल मा यअ्बउ बिकुम रब्बी लौला दु'आउकुम
77. कहो: मेरा रब तुम्हारी परवाह न करता अगर तुम्हारी दुआ न होती।

बरकत वाला है वो जिसने कसौटी उतारी

बेटा, ये सूरह लफ़्ज़ '**तबारक**' से खुलती है — एक ऐसा लफ़्ज़ जिसका मतलब कसरत वाली, छलकती, हमेशा बढ़ती बरकत और बुलंदी।

'**तबारकल्-लज़ी नज़्ज़लल्-फ़ुरक़ान 'अला 'अब्दिही लि-यकून लिल्-'आलमीन नज़ीरा** — **बरकत वाला है वो जिसने फ़ुरक़ान** अपने **बंदे** पर उतारा, ताकि वो **जहानों के लिए ख़बरदार करने वाला** हो।'

बेटा, '**अल-फ़ुरक़ान**' — कसौटी, अस्ल 'फ़र्क़' से, जुदा करना और फ़र्क़ करना। इस किताब को वो चीज़ कहा गया जो **जुदा** करती है: हक़ को बातिल से, हलाल को हराम से, हिदायत को गुमराही से, इख़्लास को दिखावे से।

बेटा, ज़िंदगी में आपको अस्ल में यही चाहिए — ज़्यादा मालूमात नहीं, बल्कि एक कसौटी। हर किसी के पास राय हैं; हर किसी के पास दलाइल हैं; हर फ़रीक़ क़ायल-कुन लगता है। **एक शख़्स को चाहिए एक मेयार जिस से वो उन के दरमियान फ़ैसला करे।** और ये वही है।

और यहाँ नबी ﷺ को दिया गया लक़ब ग़ौर कीजिए: "अब्दिही' — **उसका बंदा**। सब से बुलंद मौक़ों पर, अल्लाह उन्हें 'बंदा' कहते हैं — मेराज पर, इस आयत में, क़ुरआन के चैलेंज में। बेटा, **बंदगी सब से बुलंद दर्जा है, कोई कम-तर नहीं।**

मुंकिरों के ए'तिराज़ फिर आते हैं, और ये ग़ौर करने लायक़ हैं क्योंकि ये कभी नहीं बदले:

'**इन हाज़ा इल्ला इफ़्कुनिफ़्-तराहु व अ'आनहू 'अलैहि क़ौमुन आख़रून** — ये एक **झूठ** के सिवा कुछ नहीं जो उसने घढ़ा, और **दूसरे लोगों ने उस में उसकी मदद की।**' '**व क़ालू असातीरुल्-अव्वलीनक्-ततबहा फ़-हिय तुम्ला 'अलैहि बुक्रतंव्-व असीला** — और वो कहते हैं: **पहलों की कहानियाँ** जो उसने **लिख लीं**, सुब्ह-शाम उसे इमला की जाती हैं।'

बेटा, इल्ज़ाम ये था: उसके पास घोस्ट-राइटर हैं; वो पुरानी कहानियाँ नक़्ल कर रहा है। और अल्लाह का जवाब सादा था: '**क़ुल अन्ज़लहुल्-लज़ी यअ्लमुस्-सिर्र फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़** — कहो: इसे उस ज़ात ने उतारा जो आसमानों और ज़मीन का **हर राज़ जानता** है।'

उन्होंने उसके आम-इंसान होने पर भी ए'तिराज़ किया: '**मा लि-हाज़ार्-रसूलि यअ्कुलुत्-त'आम व यम्शी फ़िल्-अस्वाक़** — इस रसूल को क्या हुआ कि ये **खाना खाता** है और **बाज़ारों में चलता** है?'

बेटा, वो एक ऐसा रसूल चाहते थे जो खाना न खाए, या उसके साथ एक फ़रिश्ता, या एक ख़ज़ाना। वो एक ऐसे नबी को क़ुबूल न कर सके जो बाक़ी सब की तरह

बाज़ार में क़तार में खड़ा हो। और अल्लाह ने जवाब दिया: '**व मा अर्सल्ना क़ब्लक मिनल्-मुर्सलीन इल्ला इन्नहुम ल-यअ्कुलूनत्-त'आम व यम्शून फ़िल्-अस्वाक़** — और हमने तुमसे पहले कोई रसूल न भेजा मगर ये कि वो खाना खाते और बाज़ारों में चलते थे।'

बेटा, **ये हमारे लिए एक रहमत है।** हमारा नमूना एक ऐसा आदमी था जो काम करता, खाता, शादी करता, ख़रीदारी करता, और थक जाता था — तो उसकी ज़िंदगी वाक़ई नक़्ल की जा सकती है।

वो दिन जब ज़ालिम अपने हाथ काटेगा

फिर सूरह उस दिन का एक मंज़र दिखाती है, बेटा — और इस में क़ुरआन की नदामत की सब से वाज़ेह तस्वीरों में से एक है:

'**व यौम य'अ्ज़्ज़ुज़्-ज़ालिमु 'अला यदैहि यक़ूलु या लैतनित्-तख़ज़्तु म'अर्-रसूलि सबीला** — और उस दिन ज़ालिम अपने **हाथ काटेगा**, कहेगा: **काश मैंने रसूल के साथ एक राह पकड़ी होती!**'

'**या वैलता लैतनी लम अत्तख़िज़ फ़ुलानन ख़लीला — हाय मेरी बर्बादी! काश मैंने फ़लाँ को गहरा दोस्त न बनाया होता — लक़द अज़ल्लनी 'अनिज़्-ज़िक्रि ब'अ्द इज़ जाअनी — उसने मुझे ज़िक्र से गुमराह कर दिया जब वो मेरे पास आ चुका था।**'

बेटा, लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए '**फ़ुलानन**' — फ़लाँ। **क़ुरआन एक ख़ाली जगह छोड़ देता है। हर पढ़ने वाला उस में अलग नाम भरता है।**

और उस दोस्त का जुर्म ग़ौर कीजिए: 'उसने मुझे ज़िक्र से गुमराह कर दिया **जब वो मेरे पास आ चुका था**'। हिदायत आ चुकी थी। दोस्त ने उसे उस से बात कर के हटा दिया।

बेटा, ये सुह्बत के बारे में क़ुरआन की सब से तीखी तंबीहों में से एक है। कोई दुश्मन नहीं — एक **ख़लील**, एक महबूब, गहरा दोस्त। कोई जिसकी सुह्बत पुर-लुत्फ़ थी, जो शायद मज़ाक़िया और वफ़ादार और सख़ी था। **और उस दिन, उसका नाम वो है जो आदमी अपने हाथ काटते हुए चीख़ता है।**

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: आदमी अपने गहरे दोस्त के दीन पर होता है, तो तुम में से हर एक देखे कि वो किसे दोस्त बनाता है।

बेटा, ख़ुद से सादा सवाल पूछिए: **जब मैं इस शख़्स के साथ एक शाम गुज़ारता हूँ, मैं अल्लाह के क़रीब-तर छोड़ता हूँ या उस से दूर-तर?** यही पूरा इम्तेहान है।

और फिर वो आयत जिसपर क़ुरआन पढ़ने वाले हर शख़्स को काँपना चाहिए: '**व क़ालर्-रसूलु या रब्बि इन्न क़ौमित्-तख़ज़ू हाज़ल्-क़ुरआन मह्जूरा** — **और रसूल कहेगा: ऐ मेरे रब, बेशक मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को एक छोड़ी हुई चीज़ बना लिया।**'

बेटा, '**मह्जूर**' — मत्रूक, छोड़ा हुआ, एक तरफ़ रखा गया। और इब्न अल-क़य्यिम (रह0) ने छोड़ने की क़िस्में गिनवाईं: इसे न सुनना, न पढ़ना, उस पर अमल न करना, उस से फ़ैसला न करना, उस से शिफ़ा न ढूँढना, और उसके मानी पर ग़ौर न करना।

बेटा, उस फ़ेहरिस्त को ईमानदारी से पढ़िए। एक शख़्स कई नुस्ख़े रख सकता है और फिर भी इस शिकायत में शामिल हो। और ये ख़ुद रसूल ﷺ हैं जो अपनी ही उम्मत के बारे में ये शिकायत करेंगे — **तो यक़ीनी बनाइए कि वो आपके बारे में बात नहीं कर रहे।**

वो निशानियाँ जिनके पास से तुम रोज़ गुज़रते हो

फिर सूरह तख़्लीक़ की तरफ़ मुड़ती है, बेटा, ऐसी निशानियों के साथ जो इतनी मामूली हैं कि हमने उन्हें देखना छोड़ दिया।

'**अ लम तर इला रब्बिक कैफ़ मद्द़ज़्-ज़िल्ल** — क्या तुमने अपने रब की तरफ़ ग़ौर नहीं किया — **वो कैसे साया फैलाता है? व लौ शा-अ ल-ज'अलहू साकिना** — और अगर वो चाहता, तो उसे **ठहरा** हुआ बना देता — **सुम्म ज'अल्नश्-शम्स 'अलैहि दलीला** — फिर हमने **सूरज** को उसकी **रहनुमा** बनाया।'

बेटा, इसकी ख़ूबसूरती देखिए। क्या आपने कभी एक साए को हरकत करते देखा? आप उसे हरकत करते नहीं देख सकते — और फिर भी शाम तक वो पूरे सहन को

पार कर चुका होता है। अल्लाह एक ऐसी चीज़ की तरफ़ तवज्जोह दिला रहे हैं जो इतनी तदरीजी और इतनी ख़ामोश है कि कोई इसे होते हुए महसूस नहीं करता।

और बेटा, ख़ुद इस तस्वीर में एक सबक़ है: **आपकी ज़िंदगी में अल्लाह की तब्दीलियाँ अक्सर एक साए की तरह चलती हैं। आप उन्हें होते हुए महसूस नहीं करते, और फिर एक दिन आप ऊपर देखते हैं और हर चीज़ एक अलग जगह पर होती है।**

'**व हुवल्-लज़ी ज'अल लकुमुल्-लैल लिबासंव्** — और वही है जिसने तुम्हारे लिए **रात को एक लिबास** बनाया — **वन्-नौम सुबाता** — और **नींद** को **आराम** — **व ज'अलन्-नहार नुशूरा** — और दिन को एक **दोबारा उठना** बनाया।'

बेटा, एक आयत में तीन तस्वीरें। रात एक **लिबास** है — ये तुम्हें ढाँपती है, छुपाती है, तुम्हारे गिर्द लिपट जाती है जैसे कपड़ा करता है। नींद 'सुबात' है — एक काट, हरकत का मो'अत्तली। और दिन 'नुशूर' है — वही लफ़्ज़ जो दोबारा उठने (क़ियामत) के लिए इस्तेमाल हुआ, क्योंकि **हर सुब्ह तुम एक छोटी मौत से उठाए जाते हो।**

इसी लिए जागने की दुआ है: 'अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अह्याना ब'अ्द मा अमातना व इलैहिन्-नुशूर' — तारीफ़ उस अल्लाह के लिए जिसने हमें मौत देने के बाद ज़िंदगी दी, और उसी की तरफ़ दोबारा उठना है।

'**व हुवल्-लज़ी मरजल्-बहैनि हाज़ा 'अज़्बुन फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन उजाज** — और वही है जिसने **दो समंदरों** को छोड़ा — ये **मीठा और शीरीं**, और ये **नमकीन और कड़वा** — **व ज'अल बैनहुमा बर्ज़ख़ंव्-व हिज्रम्-मह्जूरा** — और उन के दरमियान एक **आड़** और एक रोकने वाली **दीवार** रखी।'

बेटा, दो पानी के ज़ख़ीरे मिलते और मिले नहीं — हर एक अपनी फ़ितरत क़ायम रखते। और एक मोमिन के लिए भी एक सबक़ है: **तुम दुनिया के बीच में रहते हो, उसकी लहरें ठीक तुम्हारे बग़ल में बहती हैं — और तुम में कुछ चीज़ को बे-मिला रहना चाहिए।**

रहमान के बंदे

और अब, बेटा, हम उस हिस्से तक पहुँचे जिसके लिए ये सूरह सब से प्यारी है — "इबादुर्-रहमान', **रहमान के बंदों** का बयान। इसे एक ऐसी तस्वीर के तौर पर पढ़िए जिस में दाख़िल होने की आपको दावत दी जा रही है।

'**व 'इबादुर्-रहमानिल्-लज़ीन यम्शून 'अलल्-अर्ज़ि हौना** — और रहमान के बंदे वो हैं जो ज़मीन पर **आजिज़ी से, नर्मी से चलते** हैं — **व इज़ा ख़ातबहुमुल्-जाहिलून क़ालू सलामा — और जब जाहिल उनसे बात करें, तो वो 'सलाम' (अमन) के अल्फ़ाज़ कहते हैं।**'

बेटा, सब से पहली सिफ़त उनकी **चाल** है — 'हौनन', नर्मी से, बिना ग़ुरूर के। और दूसरी वो कैसे चिढ़ावे को सँभालते हैं: कोई उनसे जाहिलाना, बदतमीज़ी से, लड़ाई ढूँढते हुए बात करता है — और वो 'सलाम' से, अमन के अल्फ़ाज़ से जवाब देते और आगे बढ़ जाते हैं।

बेटा, ये कमज़ोरी नहीं; ये एक ऐसे शख़्स की ताक़त है जिसके पास साबित करने को कुछ नहीं। **कोई भी एक बहस में घसीटा जा सकता है। चल देना ज़्यादा नादिर हुनर है।**

'**वल्-लज़ीन यबीतून लि-रब्बिहिम सुज्जदंव्-व क़ियामा — और वो जो अपने रब के लिए सजदा करते और खड़े रात गुज़ारते हैं।**' उनकी रातों में उसके लिए एक हिस्सा होता है।

'**वल्-लज़ीन यक़ूलून रब्बनस्-रिफ़ 'अन्ना 'अज़ाब जहन्नम** — और वो जो कहते हैं: हमारे रब, हम से जहन्नम का अज़ाब **हटा दे — इन्न 'अज़ाबहा काना ग़रामा** — बेशक, उसका अज़ाब **चिमटा हुआ**, जुदा न होने वाला है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **रात को नमाज़ पढ़ते हुए भी, वो बचाए जाने को माँग रहे हैं। कोई बे-फ़िक्री नहीं।**

'**वल्-लज़ीन इज़ा अन्फ़क़ू लम युस्रिफ़ू व लम यक़्तुरू व काना बैन ज़ालिक क़वामा** — और वो जो, **जब ख़र्च करते हैं, न फ़ुज़ूल-ख़र्ची करते हैं न कंजूसी**, बल्कि उस के **दरमियान** मो'तदिल रहते हैं।'

बेटा, एक लाइन में माली फ़ल्सफ़ा पूरा। न वो कंजूस जो दे नहीं सकता, और न वो फ़ुज़ूल-ख़र्च जो रख नहीं सकता। '**क़वामन**' — सीधा, मो'तदिल, ठहरा हुआ।

'**वल्-लज़ीन ला यद्'ऊन म'अल्-लाहि इलाहन आख़र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्-लती हर्रमल्-लाहु इल्ला बिल्-हक़्क़ि व ला यज़्नून** — और वो जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को नहीं पुकारते, न उस जान को क़त्ल करते जिसे अल्लाह ने हराम किया सिवाए हक़ के, न ज़िना करते हैं।'

बेटा, तीन बड़े गुनाह एक साथ नाम लिए गए — और फिर, फ़ौरन, दरवाज़ा: '**इल्ला मन ताब व आमन व 'अमिल 'अमलन सालिहा — सिवाए उस के जो तौबह करे, ईमान लाए, और नेक अमल करे — फ़-उलाइक युबद्दिलुल्-लाहु सय्यिआतिहिम हसनात — उन के लिए अल्लाह उनकी बुराइयों को नेकियों से बदल देगा — व कानल्-लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा**।'

बेटा, यहाँ रुकिए। अल्लाह सिर्फ़ ये नहीं कहते कि वो बुराइयों को **मिटा** देंगे। वो कहते हैं कि वो उन्हें **नेकियों से बदल** देंगे। उलमा इस पर हैरान हुए: **एक सच्ची तौबह आपके रिकॉर्ड की एंट्रियों को क़र्ज़े से नेकियों में बदल सकती है।**

'**वल्-लज़ीन ला यश्हदूनज़्-ज़ूर** — और वो जो **झूठ** पर **हाज़िर नहीं** होते — **व इज़ा मर्रू बिल्-लग़्वि मर्रू किरामा — और जब वो फ़ुज़ूल बात के पास से गुज़रते हैं, तो वक़ार से गुज़र जाते हैं।**'

बेटा, 'मर्रू किरामन' — वो **शरीफ़ाना** गुज़रते हैं। वो ग़ीबत की महफ़िल में शामिल होने को नहीं रुकते, और न उस पर कोई तमाशा खड़ा करते हैं। वो बस, वक़ार के साथ, गुज़र जाते हैं।

'**वल्-लज़ीन इज़ा ज़ुक्किरू बि-आयाति रब्बिहिम लम यख़िर्रू 'अलैहा सुम्मंव्-व 'उम्याना** — और वो जो, जब अपने रब की आयतों से नसीहत किए जाएँ, उन पर **बहरे और अंधे हो कर नहीं गिरते।**' बेटा, वो क़ुरआन को मशीनी तरह से क़ुबूल नहीं करते — वो उसे सुनते हुए दिलों के साथ क़ुबूल करते हैं।

आँखों की ठंडक

और फिर, बेटा, वो दुआ जो पूरी तस्वीर का ताज है — और ये हर वालिद और हर बीवी-शौहर की दुआ है:

'**वल्-लज़ीन यक़ूलून रब्बना हब लना मिन अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्रत अअ्युन** — और वो जो कहते हैं: **हमारे रब, हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अता कर — वज्'अल्ना लिल्-मुत्तक़ीन इमामा — और हमें परहेज़गारों का लीडर बना।**'

बेटा, 'क़ुर्रत अअ्युन' — आँखों की ठंडक। और उलमा ने पूछा: एक ख़ानदान को आँखों की ठंडक क्या बनाता है? और आयत के सिलसिले से जवाब साफ़ है: उनकी दौलत या करियर नहीं — **उनकी अल्लाह की इताअत।** कुछ सलफ़ ने कहा: एक मोमिन की आँख को उस से ज़्यादा कोई चीज़ ठंडी नहीं करती कि वो अपनी बीवी और बच्चों को अल्लाह का फ़रमाँबरदार देखे।

और दूसरा हिस्सा देखिए, बेटा — दरख़्वास्त बेबाक है: 'वज्'अल्ना लिल्-मुत्तक़ीन इमामा' — **हमें** परहेज़गारों का **लीडर** बना। सिर्फ़ हमें परहेज़गार मत बना। हमें ऐसे लोग बना जिनकी पैरवी दूसरे भलाई की तरफ़ करें।

बेटा, ग़ौर कीजिए कि ये बंदे — जो आजिज़ी से चलते हैं, जो गालियों को 'सलाम' से लेते हैं, जो रात को नमाज़ पढ़ते हैं — **क़ियादत माँगते हैं। लोगों के साथ आजिज़ी और भलाई के लिए बुलंद-हिम्मती उल्टे नहीं हैं।**

'**उलाइक युज्ज़ौनल्-ग़ुर्फ़त बिमा सबरू — उन्हें सब से ऊँचा बाला-ख़ाना दिया जाएगा उस के बदले जो उन्होंने सब्र से झेला — व युलक़्क़ौन फ़ीहा तहिय्यतंव्-व सलामा** — और उन से उस में **सलामी और सलाम** के साथ मुलाक़ात की जाएगी — **ख़ालिदीन फ़ीहा** — हमेशा उस में रहते हुए — **हसुनत मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा — क्या ही अच्छी** वो जगह और ठिकाना है।'

बेटा, और ग़ौर कीजिए उन्हें किस पर अज्र मिलता है: '**बिमा सबरू**' — उस पर जो उन्होंने **सब्र से झेला**। उन तमाम सिफ़तों में से हर एक — नर्म चाल, पुर-अमन जवाब, मो'तदिल ख़र्च, फ़ुज़ूल बात से गुज़रना — सब्र माँगती है। **यही पूरी फ़ेहरिस्त की क़ीमत का टैग है।**

अगर तुम्हारी दुआ न होती

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, एक छोटी आयत से जो आपको बताती है कि एक इंसान की क़ीमत क्या है:

'क़ुल मा यअ्बउ बिकुम रब्बी लौला दु'आउकुम — कहो: मेरा रब तुम्हारी परवाह न करता अगर तुम्हारी दुआ न होती।'

बेटा, 'मा यअ्बउ बिकुम' — वो तुम्हें कोई तवज्जोह न देता, तुम उसके नज़दीक कोई वज़न न रखते। और वो वाहिद चीज़ जो एक शख़्स को अल्लाह के सामने वज़न देती है वो है: **दुआ।** तुम्हारा उसे पुकारना।

बेटा, इस के साथ बैठिए कि ये कितना हैरत-अंगेज़ है। तुम्हारी कामयाबियाँ नहीं। तुम्हारी ज़ेहानत नहीं। मुआशरे के लिए तुम्हारी अफ़ादियत नहीं। **तुम्हारा माँगना।**

क्योंकि दुआ उस बात का इ'तिराफ़ है जो तुम अस्ल में हो: एक मोहताज मख़्लूक़, उस ज़ात के सामने जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। **एक शख़्स जो कभी नहीं माँगता उसने वुजूद में अपने मुक़ाम को ग़लत समझा।**

और इसी लिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि दुआ **इबादत है**, और कि अल्लाह के नज़दीक दुआ से ज़्यादा मो'अज़्ज़ज़ कुछ नहीं।

बेटा, तो वो सूरह जो इस किताब को 'कसौटी' कह कर शुरू हुई आपको आपकी अपनी क़ीमत की सब से सादा कसौटी थमा कर ख़त्म होती है: **क्या तुम उसे पुकारते हो?**

और दरमियान में, उसने आपको वो तस्वीर दी जिसमें बढ़ना है: नर्मी से चलो, जहालत का जवाब अमन से दो, बिना फ़ुज़ूल-ख़र्ची या कंजूसी के ख़र्च करो, फ़ुज़ूल बात से वक़ार से गुज़रो, रात को नमाज़ पढ़ो, सच्ची तौबह करो, और अल्लाह से एक ऐसा ख़ानदान माँगो जो तुम्हारी आँखें ठंडी करे।

बेटा, पूरे हिस्से के बारे में एक आख़िरी बात ग़ौर कीजिए। उनवान है "इबादुर्-रहमान' — **रहमान** के बंदे। उसके तमाम नामों में से, ये उनके लिए चुना गया। क्योंकि जो लोग यूँ जीते हैं उन्होंने समझ लिया कि वो अल्लाह की किस सिफ़त के

साथ मामला कर रहे हैं — **और दूसरों के साथ उनकी नर्मी उसी रहमत का अक्स है जिसपर वो ख़ुद भरोसा कर रहे हैं।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. तुम्हें ज़्यादा मालूमात नहीं बल्कि एक कसौटी चाहिए — और ये किताब वही बन कर उतरी।

2. नदामत की आयत का 'फ़लाँ ख़ाली एक दोस्त के नाम से भरता है — सुहबत इस से चुनो कि वो तुम्हें अल्लाह के क़रीब लाती है या नहीं।

3. क़ुरआन रखना काफ़ी नहीं: उसे छोड़ने में उस पर ग़ौर न करना और उस पर अमल न करना भी शामिल है।

4. जहालत का जवाब 'सलाम' से दो — चल देना ज़्यादा नादिर ताक़त है।

5. वैसे ख़र्च करो जैसे वो करते हैं: न फ़ुज़ूल-ख़र्च न कंजूस, बल्कि 'क़वामन' — ठहरे हुए।

6. सच्ची तौबह सिर्फ़ गुनाह नहीं मिटाती; अल्लाह उन्हें नेकियों से बदल देते हैं।

7. अल्लाह के सामने तुम्हारा वज़न तुम्हारे माँगने से नापा जाता है — 'अगर तुम्हारी दुआ न होती'।

रब्बना हब लना मिन अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्रत अअ्युन वज्'अल्ना लिल्-मुत्तक़ीन इमामा। आमीन।